अङ्क-२६
जुलाई-दिसम्बर २०१५

वेदविद्या
ISSN-2230-8962

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में वर्णित संस्कारों की आधुनिक प्रासङ्गिकता

डॉ. विजय शङ्कर द्विवेदी

वेद का अर्थ ज्ञान है। वेदाङ्गों को वेद का अङ्ग माना गया है जिसमें शिक्षा कल्प, निरुक्त, छन्द, व्याकरण, ज्योतिष है। कल्प को वेद पुरुष का हस्त कहा गया है। 'हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते' जिस प्रकार प्राणी हाथ से कार्य करता है उसी प्रकार कल्पशास्त्र रूपी हस्त कर्मकाण्डों को करता है। कल्प के अन्तर्गत श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र कल्पशास्त्र रूपी हस्त कर्मकाण्डों को करता है। कल्प के अन्तर्गत श्रैतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र है जिनमें ४२ कर्मों के प्रतिपादन का स्वरूप है जिनमें १४ श्रौतयज्ञ, ७ गृह्ययज्ञ, ५ महायज्ञ, १६ संस्कारों का वर्णन प्रमुख है।

हमारे ऋषियों ने ज्ञान का साक्षात्कार किया और समाज को सही दिशा देने के लिए ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ाते रहे। इसलिए उन्हें समाज सुधारक, युग द्रष्टा, संविधान निर्माता एवं समाज प्रबन्धक कहा गया हैं। उनके शास्त्र को उस समय का संविधान माना गया हैं। हमारे ऋषि परम्परा में आपस्तम्ब ऋषि ने आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का प्रणयन किया जिसमें संस्कार लौकिक कर्मों, आभिचारिक क्रियाओं की प्रासङ्गिकता है। यह अस्टपटलों एवं तेईस खण्डों में विभक्त हैं। इसमें ग्यारह संस्कारों का वर्णन किया गया हैं जो विवाह संस्कार से प्रारम्भ है। इसमें अन्त्येष्टि संस्कार का अभाव पाया जाता है। अन्य संस्कारों में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्रासन, चौलकर्म, गोदान, उपनयन, समावर्तन आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। संस्कार सम् + √कृ + घञ् प्रत्यय से बनता है। संस्कृत साहित्य में इसका प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण, परिस्करण, धार्मिक विधि विधान आदि अर्थों में किया गया है।

संस्कारों को व्यक्ति के दैहिक, मानसिक, बौद्धिक परिस्कार के लिए आवश्यक माना गया है जिससे वह समाज का पूर्ण विकसित सदस्य बनकर अपना तथा समाज का चतुर्दिक विकास कर सके। संस्कार जीवन के सुख, योग और क्षेम की प्राप्ति के लिए किये जाते हैं तथा वे नैतिक गुणों की प्रेरणा भी देते हैं। संस्कारों का एक मनोवैज्ञानिक महत्त्व भी देखा जा सकता है। सभी संस्कार फलरूप में आधुनिक समाज के लिए प्रासङ्गिक है क्योंकि वर्तमान समाज विकृत हो रहा है। हम अपने ऋषियों द्वारा बताये गये मार्गों से भटक गये हें और कर्मकाण्डों और ऋषि-निर्देशों को औपचारिकता मात्र मान बैठे हैं सही भी है उसमें जो प्राणतत्त्व या प्रतीक है उसको हम नहीं पकड पा रहे है। इसलिए उसका परिणाम नहीं प्राप्त हो रहा है प्राण विहीन लास ही होता हैं उसी प्रकार प्राणतत्त्व प्रतीक विहीन होने से उसका लाभ नहीं मिल रहा है। यदि हम ऋषियों द्वारा बताये गये मूलतत्त्व से युक्त होकर संस्कारादि करें तो

फलस्वरूप हम दिव्य समाज का निर्माण कर सकते हैं आपस्तम्ब गह्यसूत्र में जो गर्भाधान संस्कार का वर्णन है उसका उद्देश्य स्वस्थ, सजग एवं समाजोपयोगी सन्तान को उत्पन्न करना था। यही कारण है कि इसे यज्ञ का स्वरूप दिया गया है।

रजसः प्रादुर्भावात् स्नातामृतुसमावेशन उत्तराभिरभिमन्त्रयते।[१]

जिससे उत्पन्न होने वाली सन्तान समाज को नई दिशा देती थी और कलह रहित समाज का निर्माण करती थी। आधुनिक समय में गर्भाधान संस्कार को धार्मिक, यज्ञ का स्वरूप न मानकर भोग एवं सुख का आधार माना गया है जिसके कारण अविकसित आत्माओं का अवतरण हो रहा है जो समाज को विकृत कर रहे हैं। यदि आपस्तम्ब गृहयसूत्र के अनुसार गर्भाधान हो तो निश्चित ही दिव्य आत्माओं का अवतरण हो सकता है और इच्छानुसार पुत्र-पुत्री की प्राप्ति भी हो सकती है जिससे फलरूप में समाज में हो रहे कन्या भ्रूण हत्या पर भी अङ्कुश लग सकता है जो आधुनिक समय में प्रासङ्गिक है। इस प्रकार आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में वर्णित संस्कार की आधुनिक प्रासङ्गिकता है।

पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन संस्कार भी बहुत उपयोगी है। पुंसवन संस्कार को प्रजापत्य संस्कार भी कहा जाता है पुंसवन संस्कार गर्भ के तीसरे अथवा चौथे महीने में अथवा गर्भ स्पष्ट होने पर किया जाता है। पुष्य नक्षत्र अथवा किसी पुरुष नक्षत्र के योग होने पर पुंसवन संस्कार का विधान है।

पुंसवनं व्यक्ते गर्भे तिष्येण।[२]

इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य गर्भस्थ शिशु की रक्षा करना है क्योंकि मानवी गर्भ के विनष्ट होने की सम्भावना दो समय प्रबल होती है। पहला गर्भ धारण के तीसरे चौथे महीने के बीच दूसरा छठा महीने के बीच यही कारण है कि पुंसवन और सीमन्तोनयन गर्भ रक्षा हेतु लगभग इसी अवधि में किया जाता था।

सीमन्तोन्नयनं प्रथमे गर्भे चतुर्थेमासि।[३]

सीमन्तोन्नयन संस्कार में गृहस्थ गर्भवती पत्नी के केशों को ऊपर उठाता है। इस कारण इस कर्म को सीमन्तोन्नयन कहा गया है। इस संस्कार के मूल में गर्भ की रक्षा की भावना निहित है साथ ही साथ गर्भिणी स्त्री का मन प्रसन्न रहे तथा मानसिक रूप से कल्पनाओं में खुशी का अनुभव करे जिससे गर्भ पर अनुकूल प्रभाव पड़े और गर्भ स्थिर होकर दिन प्रतिदिन वृद्धि करे। इसमें वीणावादन करना भी बताया गया है जिससे मधुर संगीत से दोनों का मन प्रफुल्लित रहता है और स्वस्थ शिशु जन्म लेता है तथा बड़ा होकर समाज को नई दिशा देने में सक्षम होता है। जिसकी आधुनिक समय में प्रासङ्गिकता

---

१ आपस्तम्ब गृहयसूत्र ३/८/१३

२ आपस्तम्बगृह्यसूत्र ६/१४/९

३ आपस्तम्बगृह्यसूत्र ६/१४/१

है। क्योंकि शिशु की देखरेख जन्म से नहीं अपितु गर्भ से ही करनी चाहिए क्योंकि जैसी गर्भिणी स्त्री का स्वभाव रहन सहन, खानपान आदि रहता है उसका प्रभाव शिशु पर पड़ता है इसी प्रकार आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का सीमन्तोन्नयन और पुंसवन संस्कार आधुनिक जीवन के लिए प्रासङ्गिक है।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र के अनुसार जातकर्म संस्कार का अपना महत्त्व है। बच्चे के जन्म पर जात कर्म संस्कार किया जाता था इसमे आयुस्य तथा प्रजाजनन कृत्यों का अनुष्ठान होता था और नवजात को पत्थर के समान दृढ और बुद्धिमान होने के आशीर्वाद दिये जाते थे। शैशव में प्रत्येक अवसर पर आशापूर्ण जीवन के प्रतीक, आनन्द और उत्सव मनाये जाते थे जिससे शिशु के विकास का उपयुक्त वातावरण प्रस्तुत होता था ऐसा बालक समाज को सही दिशा देता था। इस संस्कार से जातक के अन्दर एक आशापूर्ण जीवन जीने का वातावरण विकसित होता था।

इस संस्कार का आधुनिक प्रासङ्गिकता है इसके करने से वर्तमान अवसाद के शिकार हो रहे व्यक्तियों की संख्या में कमी हो सकती है। नवजात कान में वाक् शब्द का उच्चारण करने, सोने की शलाका से दधि, घृत तथा मधु चटाना उसे माता के स्तन पर रखना क्रियाएँ वर्णित हैं।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में नामकरण संस्कार की अपनी विशेषता है क्योंकि एक व्यक्ति का नाम भी उसके स्वभाव, आन्तरिक यात्रा एवं मनोविज्ञान पर प्रभाव डालता है। धार्मिक नाम, प्रकृति से सम्बन्धित नाम, देवताओं से सम्बन्धित नाम आदि का व्यक्ति पर प्रभाव पडता है। नाम का अर्थ होता है वर्तमान समय में कुछ नाम विचित्र रखे जाते हैं और बच्चे का स्वभाव भी विचित्र ही रहता है।

द्व्यक्षरं चतुरक्षरं वा नामपूर्वमाख्यातोत्तरं दीर्घाभिनिष्ठा नान्तं घोषवदाद्यन्तरन्तस्थम्।
अजुमाक्षरं कुमार्याः।[१]

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का अन्नप्राशन, चौलकर्म संस्कार आदि की आधुनिक प्रासङ्गिकता है। अन्नप्राशन में प्रथम बार शिशु को भोजन खिलाया जाता है जैसा ही भोजन खिलाया जाता है लगभग बच्चा वैसा खाना पसन्द करता है इसलिए अन्नप्राशन में सादा एवम् सात्त्विक भोजन खिलाने का विधान है जिससे वह धीरे-धीरे उसी प्रकार के भोजन का अभ्यस्त हो जाये, जैसा व्यक्ति अन्न खाता है उसी प्रकार का उसका स्वभाव भी बनता है कहा भी गया है जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन। आधुनिक जीवन में अन्नप्राशन का महत्त्व है क्योंकि आजकल बच्चे सात्विक भोजन से दूर होते जा रहे हैं और फास्टफूड के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। ज्यादा मसालेदार, चटपटे, तीखा, तामसी भोजन, हमारे शरीर एवं स्वभाव पर बुरा असर डालते हैं, जिसके कारण लोगों में सहनशीलता आदि की कमी देखने को मिलती है और फलरूप में तुरन्त उग्र एवं झगडे करने की

[१] आपस्तम्ब गृह्यसूत्र ६/१५/९-११

तैयार हो जाते हैं। उनपर क्रोध इतना प्रभावशाली हो जाता है उसके परिणाम पर विचार नहीं करते और अपना तथा समाज दोनों की क्षति कर बैठते हैं। अतः अन्नप्राशन से लेकर अनवरत बच्चों को सात्विक एवं स्वास्थ्यवर्धक भोजन देना चाहिए।

जन्मनोऽधि षष्ठे मासि ब्राह्मणान् भोजयित्वाऽऽशिषो वाचयित्वादधि मधु घृतमोदनमिति संसृज्योत्तरैर्मन्त्रैः कुमारं प्राशयेत्।[१]

इस प्रकार इसकी आधुनिक प्रासङ्गिकता है।

चौलकर्म संस्कार का भी वर्णन आपस्तम्बगृह्यसूत्र में किया गया है।

जन्मनोऽधि तृतीये वर्षे चौलं पुनर्वस्वोः।[२]

जिसमें बालों को काटा जाता है यह तृतीय वर्ष में किया जाता जिससे बालक के सिर साफ हो जाते है तथा बालों में खर्च होने वाले तत्त्व शरीर में लगते है क्योंकि उस समय बालक बढ रहा होता है उसे अधिक पौष्टिक तत्त्वों की आवश्यकता होती है। बाल के अभाव में गर्दन भी मोटा होता है। प्रायः देखा जाता है कि जो सिर पर बाल कम रखते है उनके गर्दन मोटे होते है और स्पेन्टलाइटिस की समस्या भी अपेक्षा कृत कम होती है। वर्तमान समय में फैशन के दौर में बच्चे बाल नहीं मुडवाना चाहते जिसके कारण असमय में बाल पकना एवं बाल झडना आदि समस्याये उत्पन्न होती है। इस प्रकार आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का चौलकर्म संस्कार की आधुनिक प्रासङ्गिकता है। इसी प्रकार गोदान एवं उपनयन संस्कार की भी आधुनिक प्रासङ्गिकता है। उपनयन संस्कार से शिक्षा के साथ-साथ बालक की आकाक्षाओं, अभिलाषाओं व इच्छाओं, सत्य एवं कर्त्तव्यों के प्रति गुरुपदेश से दृढता प्रदान किया जाता था जिससे वह अनुशासित, प्रगतिशील परिस्कृत जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार रहता था। जो वर्तमान समय के लिए आवश्यक है क्योंकि सर्वत्र भ्रष्टाचार, उत्कोचादि व्याप्त है, इससे व्यक्ति तभी दूर रह सकता है जब उसके संस्कार दृढ हों। आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में उपनयन संस्कार के अन्तर्गत कुश पर बैठना भी विलासिता से हटकर साधारण जीवन जीने का प्रतीक है जो विलासितापूर्ण जीवन से हटकर साधारण जीवन एवं उच्च विचार रखने की प्रेरणा देता है। ऐसा बालक बडा होकर समाज को नई दिशा देने में सक्षम हो सकता है। विलासिता की वस्तुएँ वर्तमान समय में अनेक बीमारियों को उत्पन्न करने में अपनी अहं भूमिका निभा रही हैं इस प्रकार आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का यह प्रतीक वर्तमान में भी प्रासङ्गिक है।

---

[१] आपस्तम्ब गृह्यसूत्र ६/१६/१-३

[२] ...

आचार्य द्वारा सावित्री मन्त्र का दान भी बालक के अन्दर धार्मिक एवं आध्यात्मिक भावना को जन्म देता है।

पुरस्तात् प्रत्यङ्ङासीनः कुमारो दक्षिणेन पाणिना दक्षिणं पादमन्वारभ्याह सावित्रीं भो ! अनुब्रूहीति। तस्मा अन्वाह तत्सवितुरिति।[१]

जो श्रद्धा, सम्मान एवं गुरु आज्ञा पालन का प्रतीक है। ऐसा बालक सर्वदा गुरु के प्रति आदर प्रकट करता है। वर्तमान समय में जहाँ पर गुरुओं का अपमान विद्यार्थी कर रहे हैं कहीं न कहीं संस्कारों का अभाव है आज भी गुरुकुल के विद्यार्थी या जिनका समय से संस्कार हुआ है वे अपने गुरुओं का सम्मान अपेक्षाकृत अधिक करते है। उपनयन संस्कार में बालक को जो उपदेश दिया जाता है[२] उसका मुख्य उद्देश्य भी समाज को व्यवस्थित करना ही होता था। उसे उसके कर्त्तव्य का ज्ञान कराया जाता था जो फलरूप में कर्त्तव्य पालन से दूसरे के प्रतिफलित मानवाधिकार को भी सुरक्षित करता था जो वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में पितरों के लिए आसन एवं सम्मान का विधान किया गया है।[३] जो पितरों एवं बुजुर्गों के लिए सम्मान का प्रतीक है वर्तमान समय में जो बुजुर्गो का अपमान समाज में देखने को मिल रहा है वह हर दृष्टि से बहुत ही गलत है यदि आपस्तम्ब गृह्यसूत्र से व्यक्ति प्रेरणा प्राप्त करे तो निश्चित ही आधुनिक सामाजिक जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण बात होगी।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का समावर्तन संस्कार भी अध्ययन के पश्चात् विवाह करने की अनुमति प्रदान करता है[४] जो इस बात का प्रतीक है कि अध्ययन काल में किसी भी प्रकार का व्यवधान न हो जिसका आधुनिक जीवन में भी महत्त्व है। जो विद्यार्थी अपने अध्ययन काल में ही विवाह कर लेते हैं अथवा प्रेम प्रसङ्ग में अपने को लिप्त कर लेते हैं उसका परिणाम यह होता है कि न तो वे वैवाहिक जीवन का दायित्व निभा पाते हैं और न ही अध्ययन का उनकी स्थिति त्रिशंकु की तरह होती है।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में कुछ ऐसे कृत्यों एवं बातों का वर्णन है जो महत्त्वपूर्ण हैं।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र के तृतीय खण्ड में कन्या वरण के सन्दर्भ में वर के पसन्द का वर्णन किया गया है जो महत्त्वपूर्ण है क्योंकि जो कन्या वर को आकृष्ट कर रही है उसके प्रति सकारात्मक भाव एवं प्रेम बना रहता है और तलाक की सम्भावनाएँ भी कम होती है। विवाह के समय पाणिग्रहण

---

[१] आपस्तम्ब गृह्यसूत्र ३/११/८-९
[२] आपस्तम्ब गृह्यसूत्र ४/११/२३
[३] आपस्तम्ब गृह्यसूत्र ४/११/९-१२
[४] आपस्तम्ब गृह्यसूत्र ५/१२/१

और अग्नि की प्रदक्षिणा की जाती है इससे वर और कन्या एक दूसरे के साथ जीवन भर रहने और सहयोग करने का सङ्कल्प लेते हैं। अग्नि और उपस्थित लोग इसके साक्षी होते हैं इसका प्रभाव मानसिक रूप से वर एवं कन्या पर पडता है और एक दूसरे से अलग होने की सम्भावना कम होती है।

अस्मारोहण भी जीवन में आने वाली कठिनाइयों का प्रतीक है जिससे वर वधू मानसिक रूप से कठिनाइयों का मुकाबला करने की प्रेरणा प्राप्त करते थे और अपने लक्ष्य यानीपरम तत्त्व या कैवल्य को प्राप्त करते थे। आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में वधू का गृहप्रवेश एवं वधू को घर दिखाने का वर्णन प्राप्त होता है। वधू को लक्ष्मी के रूप में माना जाता था जो वधू का गृह में आदर का प्रतीक है। वर्तमान में यह भाव जिस घर में है वहाँ प्रेमपूर्ण वातावरण है और जिस घर में वधू का सम्मान नहीं है वहाँ कलह देखने को प्राप्त होता है।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र के आभिचारिक क्रिया का भी अपना महत्त्व है। पत्नी, पति के मन को आकृष्ट करने का जो अभिचार करती है। वर्तमान समय में भले इसका महत्त्व न हो फिर भी पत्नी इस क्रिया को करती है तो मानसिक रूप से वह सन्तुष्ट हो जाती है और उसका मानना होता है कि उसका पति उसी का है जिससे आकर्षण का सिद्धान्त (Law of attraction) पैदा होता है और उसका पति उसी का होकर रहता है, ऐसी सम्भावना बढ जाती है।

श्वो भूते उत्तरयोत्थाप्योत्तराभिस्ति सृभिरभिमन्त्र्योत्तरया प्रतिच्छन्नां हस्तयोराबध्य शय्याकाले बाहुभ्यां भर्तारं परिगृहणीयदुपधानलिङ्गया। वश्यो भवति।[१]

अभिचार मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं। व्यक्ति मानसिक रूप से दृढ हो जाता है कि उसने अभिचार कर लिया है अब कोई समस्या नहीं होगी। ऐसी स्थिति में उसे मानसिक रोग नहीं होगा। आधुनिक जीवन में मनोरोगियों की संख्या दिनो-दिन बढ रही है जो समाज के लिए बुरा सङ्केत है। आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में वर्णित संस्कारों की आधुनिक प्रासङ्गिकता है जो प्रतिफलित समाज को सही दिशा देने में सहायक सिद्ध हो सकते है।

डॉ. विजय शङ्कर द्विवेदी
असि. प्रोफेसर - संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ११०००७

[१] आपस्तम्ब गृह्यसूत्र ३/९/६-७